



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनांक 21/01/20	9-7-23	2	1-4

राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व में सामंजस्य जरूरी : कुठियाला

हकृति के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी का आयोजन

जगमण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में शनिवार को 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बीके कुठियाला रहे। उन्होंने कहा कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है। क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच समाजस्य बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है।

प्रो. कुठियाला ने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नरारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा।



इकृति के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में व्यक्तित्व संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रोफेसर बी.के. कुठियाला संबोधित करते हुए। • पी.आर.ओ

1400 ईस्वी तक भारत की जीडीपी सबसे अधिक थी

उन्होंने बताया कि यूरोपियन यूनियन ने अर्थशास्त्री एंगर्स मेडिसन को दुनिया के अर्थशास्त्र विषय पर जीरो से शुरुआत कर इतिहास लिखने को कहा। तीन साल बाद इस अर्थशास्त्री ने डाटा सहित रिपोर्ट पेश भी की। इस रिपोर्ट में बताया गया कि प्राचीन काल में 1400 ईस्वी तक भारत की जीडीपी व अंतरराष्ट्रीय व्यापार अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक था। हमारे देश का इतिहास सबसे पुराना व सबसे समृद्ध रहा है।

भारत का इतिहास 20 हजार वर्ष पुराना

उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष या फिर आर्यव्रत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इंडियन बनाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है। सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र के रूप में जाने जाते थे। इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे हैं।

ये रहे उपस्थित

इससे पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. मंजु मेहता ने अतिथियों का स्वागत किया जबकि अधिष्ठाता डा. नीरज कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान अध्ययन केंद्र हिसार के अध्यक्ष डा. जगवीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अवनीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल सहित विभिन्न महाविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षाविद, वैज्ञानिक, शोधार्थी उपस्थित रहे।

तभी उसका क्रमिक विकास संभव साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं और बढ़कर अपना स्वयं का विनाश है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के तो हम मानस से दानव प्रवृत्ति की करेंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	9-7-23	4	5-6

‘राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी’



एचएयू में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते प्रो. बीके कुठियाला। संवाद

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। एचएयू के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में शनिवार को ‘मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास’ विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता पंचनंद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रो. बीके कुठियाला ने कहा कि राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी है।

प्रो. कुठियाला ने कहा कि पहले व्यक्ति की खुद की पहचान, फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है।

एचएयू के सभागार में आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता पहुंचे प्रो. बीके कुठियाला

यूरोपियन यूनियन ने अर्थशास्त्री एंगर्स मेडिसन की रिपोर्ट में बताया गया कि प्राचीन काल में 1400 ईवी तक भारत का जीडीपी व अंतरराष्ट्रीय व्यापार अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक था। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने अतिथियों का स्वागत व मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मंच संचालन मोहित कुमार ने किया। इस अवसर पर हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अमनीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब डेसरी	9-7-23	3	1-2

राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी : प्रो. कुठियाला

हकूति मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी आयोजित

हिसार, 8 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बी.के. कुठियाला उपस्थित रहे।

मुख्य वक्ता प्रो. बी.के. कुठियाला ने कहा कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम

मानस से दानव प्रवृत्ति की ओर बढ़कर अपना स्वयं का विनाश करेंगे।

उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष या फिर आर्यव्रत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इंडियन बनाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है।



कार्यक्रम को संबोधित करते मुख्य वक्ता प्रो. बी.के. कुठियाला।

सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र के रूप में जाने जाते थे। इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे हैं।

इससे पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने स्वागत किया, जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। साथ ही मंच संचालन मोहित कुमार ने किया। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगवीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अलनीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल अन्य सदस्यगण, शहर के गणमान्य व्यक्ति सहित विश्वविद्यालय से जुड़े विभिन्न महाविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, शोधार्थी सहित अन्य कर्मचारी भी शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरिभूमि	9-7-23	9	4-8

हकूति के सभागार में संगोष्ठी में बोले प्रोफेसर बीके कुठियाला

सामंजस्य बढ़ाकर अलग पहचान देना क्रमिक विकास

हरिभूमि न्यूज | हिंसार

पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बीके कुठियाला का कहना है कि राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी है। उन्होंने कहा कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद



हिंसार। हकूति के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में व्यक्तिगत संगोष्ठी को संबोधित करते प्रोफेसर बीके कुठियाला।
फोटो: हरिभूमि

एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। प्रो. बीके कुठियाला एचएयू के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में मानवत्व, राष्ट्रत्व,

व्यक्तित्व व क्रमिक विकास विषय पर एक संगोष्ठी को मुख्य वक्ता के तौर पर संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त करने से नारायण बनना है तो

व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा, तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानव से दानव प्रवृत्ति की ओर बढ़कर अपना स्वयं का विनाश करेंगे। उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष या फिर आर्यव्रत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इतिहास 20 हजार साल पुराना है। सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र

के रूप में जाने जाते थे, इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे हैं। यूरोपियन यूनिशन ने अर्थशास्त्री एंगर्स मेडिसन को दुनिया के अर्थशास्त्र विषय पर जीरो से शुरुआत कर इतिहास लिखने को कहा। तीन साल बाद इस अर्थशास्त्री ने डाटा सहित रिपोर्ट पेश भी की। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने स्वागत किया। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिंसार के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अरुण कुमार, सलाहकार डॉ. बंसल अन्य सदस्य अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनांक भास्कर	9-7-23	2	4-6

हकृषि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य होना चाहिए : प्रो. कुठियाला

भास्करपत्र, हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनंद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बी.के. कुठियाला रहे। उन्होंने कहा हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्र व



मुख्य वक्ता प्रोफेसर बी.के. कुठियाला संबोधित करते हुए।

मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने अतिथियों का स्वागत किया,

जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। साथ ही मंच संचालन मोहित कुमार ने किया। इस अवसर पर पंचनंद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगवीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अमनीशा वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल अन्य सदस्यगण, शहर के विभिन्न संस्थानों के गणमान्य व्यक्ति सहित विश्वविद्यालय से जुड़े विभिन्न महाविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, शोधार्थी सहित अन्य कर्मचारी भी शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कर्तू	9-7-23	5	1

हकूति सभागार में

संगोष्ठी का आयोजन

हिसार (सच कर्तू न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बी.के. कुठियाला उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता प्रोफेसर बी.के. कुठियाला ने अपने संबोधन में कहा कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में लिखा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। इस अवसर पर मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार, पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र के अध्यक्ष डॉ. जगदीश सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अश्वनीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल सहित अन्य कर्मचारी भी शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उज्ज्वल समाचार	9-7-23	5	4-8

राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी : प्रो. बी.के. कुठियाला

हकूति के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी का आयोजन

हिसार, 8 जुलाई (बिरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनंद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बी.के. कुठियाला उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता प्रोफेसर बी.के. कुठियाला ने अपने संबोधन में कहा कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। उन्होंने बताया कि यदि

या फिर आर्यव्रत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इंडियन बनाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है। सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र के रूप में जाने जाते थे। इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे हैं। उन्होंने बताया कि यूरोपियन यूनियन ने अर्थशास्त्री एंगस

शहदत को स्वीकार किया और एक इच्छा व्यक्त की थी कि मैं अगला जन्म भी इसी भारत में लूं। ये व्यक्तित्व से राष्ट्रत्व का विकास है। कोविड के दौरान जिन देशों ने वैक्सिन की मांग की तो लगभग हर देश को भारत ने वैक्सिन उपलब्ध करवाई, ये मानवत्व है। जो मेरी तरह नहीं सोचता था उसको जीने का अधिकार नहीं है यह मानवत्व का विपरीत उदाहरण है। आफ्ना



मंच पर बैठे प्रोफेसर बी.के. कुठियाला सवालियों के जवाब देते हुए।

व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम बिंदुगो में आगे बढ़ते हैं तो हम मानस से दानव प्रवृत्ति की ओर बढ़कर अपना स्वयं का विनाश करेंगे। उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष

मेडिसन को दुनिया के अर्थशास्त्र विषय पर जीरो से शुरूआत कर इतिहास लिखने को कहा। 3 साल बाद इस अर्थशास्त्री ने डाटा सहित रिपोर्ट पेश भी की। इस रिपोर्ट में बताया गया कि प्राचीन काल में 1400 ई.पू. तक भारत का जीडीपी व अंतरराष्ट्रीय व्यापार अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक था। हमारे देश का इतिहास सबसे पुराना व सबसे समृद्ध रहा है। उन्होंने बताया कि क्रांतिकारी भगत सिंह जैसे अनेकों शहीदों ने

व्यवहार, आचरण आपको मानव, दानव या फिर नारायण बनाता है। व्यक्ति के आंतरिक सोच में तीन महत्वपूर्ण बातें रहती हैं, जिनमें हम अपने बारे में क्या सोचते हैं, दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं और हम दूसरों के बारे में क्या सोचते हैं। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने स्वागत किया, जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। साथ ही मंच संचालन

मोहित कुमार ने किया। इस अवसर पर पंचनंद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अक्वीश वर्मा, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल अन्य सदस्यगण, शहर के विभिन्न संस्थानों के गणमान्य व्यक्ति सहित विश्वविद्यालय से जुड़े विभिन्न महाविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, शोधार्थी सहित अन्य कर्मचारी भी शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	09.07.2023	--	--

राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी : प्रो. बी.के. कुठियाला

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनंद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, चंडीगढ़ व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बी.के. कुठियाला उपस्थित रहें।

मुख्य वक्ता प्रोफेसर बी.के. कुठियाला ने अपने संबोधन में कहा कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की

खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास



कहलाता है। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक

दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानस से मानव प्रवृत्ति की ओर बढ़कर अपना स्वयं का विनाश करेंगे।

उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष या फिर आर्यव्रत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इंडियन बनाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है। सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में

हकूबि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी का आयोजन हुआ

सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र के रूप में जाने जाते थे। इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे हैं। उन्होंने बताया कि यूरोपियन यूनियन ने अर्थशास्त्री एंगर्स मेडिसन को दुनिया के अर्थशास्त्र विषय पर जीरो से शुरुआत कर इतिहास लिखने को कहा। 3 साल बाद इस अर्थशास्त्री ने डाटा सहित रिपोर्ट पेश भी की। इस रिपोर्ट में बताया गया कि प्राचीन काल में 1400 ई.वी. तक भारत का जीडीपी व अंतरराष्ट्रीय व्यापार अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक था।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	08.07.2023	--	--

राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी : प्रो. बी.के. कुठियाला

हकूति के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व प्रतियोगिता' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनाथ शीष संस्कृत, अध्यक्ष के.के. कुठियाला व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रो.के. कुठियाला उपस्थित रहे।



हकूति के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में व्यक्तित्व संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रो.के. कुठियाला संबोधित कर रहे हैं।

मुख्य वक्ता प्रो.के. कुठियाला ने अपने संबोधन में कहा कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, हमारी से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी विचारों का उत्तर व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के

सांस्कृतिक अर्थों में दिया है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना प्रतियोगिता कहलगत है। उन्होंने

कहा कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर ले तो 'व्यक्तित्व' बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक शीष को अत्यंत होना। तभी उसका प्रतियोगिता

संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानव से दानव प्रकृति को और बढ़ते अपना स्वयं का बनाते हैं। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंगू मेहत ने स्वागत किया, जबकि मौखिक विद्वान एवं मानविकी महाविद्यालय के अध्यापक डॉ. गौरव कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव पढ़ित किया। साथ ही शीष संस्कृतन में प्रतिष्ठित कुठियाला ने किया। इस अवसर पर पंचनाथ शीष संस्कृत, अध्यक्ष के.के. कुठियाला के अध्यक्ष डॉ. जगदीश सिंह, उपस्थित प्रो. अमनीरा वर्मा, सहायक कुठियाला वसंत अन्य सदस्यगण, शहर के विभिन्न संस्थानों के पणनाथ व्यक्तित्व संस्कृत विश्वविद्यालय से जुड़े विभिन्न महाविद्यालय के अध्यापक, विभागाध्यक्ष, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, संस्कृत संस्कृत अन्य कार्यवाही भी शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिन्दुस्थान समाचार	08.07.2023	--	--



हिसार: राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी: प्रो. बीके कुठियाला

13 - 1 shares

कृषि के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभाघर में सगौड़ी का अखंडतन हिसार, 8 जुलाई (हि.सं.) पंचनंद शोध संस्थान, अध्यापन केंद्र, बडौंगट व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर बीके कुठियाला का कहना है कि राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य जरूरी है।

उन्होंने कहा कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर अस्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के सांख्यिक अर्थों में दिया है। वे शनिवार को एचएयू के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभाघर में 'मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास' विषय पर एक सगौड़ी की मुख्य बजल के तौर पर संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से सहायता बनना है तो व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्य व सकारात्मक संबंध को आगमन होगा, सभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर गकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानव से पशु प्रवृत्ति की ओर बढ़कर अपना शरीर का विन्यास करेंगे। उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें भारतवासी, भारतीय, भारतवासियों के अर्थों में कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान दूरे पनवाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है। सब मानते हैं कि बहुत लंबा कात ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, सम्पन्न और मजबूत राष्ट्र के साथ में जाने जाते थे, इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे हैं। यूरोपियन दूतियन ने अर्थशास्त्री एगस्त मैकिलन को दुनिया के अर्थशास्त्र विषय पर जीरो से शुरूआत कर इतिहास लिखने को कहा। तीन साल बाद इस अर्थशास्त्री ने डाटा सहित रिपोर्ट देना भी की। इसके पूर्व विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मजू मेवता ने स्वागत किया, जबकि मौखिक शिक्षण एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद किया। इस अवसर पर पंचनंद शोध संस्थान, अध्यापन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगदीश सिंह, उपाध्यक्ष प्रो. अजय शर्मा, सहायकार प्रो. बबलू अग्रवाल, सहायक प्रो. विभूति शर्मा के समस्त अध्यक्ष सहित विश्वविद्यालय से जुड़े विभिन्न महाविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षाविद्, वैज्ञानिक, सोशल साइंस अल्प कर्मचारी भी शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	08.07.2023	--	--

भारत का इतिहास सबसे पुराना व सबसे समृद्ध : प्रो. कुठियाला

हकृषि के मानव संसाधन
प्रबंधन निदेशालय के सभागार
में संगोष्ठी का आयोजन

नभ-छोर न्यूज ॥ 08 जुलाई

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में मानवत्व, राष्ट्रत्व, व्यक्तित्व व क्रमिक विकास विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता पंचनंद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र व हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रो. बीके कुठियाला उपस्थित रहे। प्रो. कुठियाला ने कहा कि हम कौन हैं, हमारी पहचान, अस्तित्व, दूसरों से संबंध व निर्भरता क्या है, इन सभी जिज्ञासाओं का उत्तर



व्यक्तित्व-राष्ट्रत्व व मानवत्व के शाब्दिक अर्थों में छिपा है और क्रमबद्ध तरीके से पहले व्यक्ति की खुद की पहचान फिर राष्ट्र और उसके बाद एक-दूसरे के बीच सामंजस्यता बढ़ाकर एक अलग ही पहचान देना क्रमिक विकास कहलाता है। उन्होंने बताया कि यदि व्यक्ति को जिंदगी में सफल होना है और मोक्ष प्राप्त कर नर से नारायण बनना है तो

व्यक्तित्व, राष्ट्रत्व व मानवत्व के बीच सामंजस्यता व सकारात्मक सोच को अपनाना होगा। तभी उसका क्रमिक विकास संभव है। अगर नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हम जिंदगी में आगे बढ़ते हैं तो हम मानस से दानव प्रवृत्ति की ओर बढ़कर अपना स्वयं का विनाश करेंगे।

उन्होंने बताया कि 1400 वर्ष पूर्व हमें

भारतवासी, भारतीय, भारतवर्ष या फिर आर्यवंत कहा जाता था। अंग्रेजों ने हमारी पहचान इंडियन बनाई। हमारे देश का इतिहास 20 हजार साल पुराना है। सब मानते हैं कि बहुत लंबा काल ऐसा रहा कि हम दुनिया में सर्वश्रेष्ठ संस्कृति, समाज और मजबूत राष्ट्र के रूप में जाने जाते थे। इसलिए हम दुनिया के सामने उदाहरण के तौर पर उभरे हैं। हमारे देश का इतिहास सबसे पुराना व सबसे समृद्ध रहा है। उन्होंने बताया कि क्रांतिकारी भगत सिंह जैसे अनेक शहीदों ने शहादत को स्वीकार किया और एक इच्छा व्यक्त की थी कि मैं अगला जन्म भी इसी भारत में लूं। ये व्यक्तित्व से राष्ट्रत्व का विकास है। इस मौके पर डॉ. मंजू मेहता, डॉ. नीरज कुमार, मोहित कुमार, डॉ. जगवीर सिंह, प्रो. अक्वीश वर्मा, ज्ञानचंद बंसल आदि मौजूद थे।